ग्रामीण समाज एवं लघु परम्परायें : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

लक्षिका राय,

शोध छात्रा, समाजशास्त्र, डी.एस.बी. परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

प्रस्तावना

भारतीय समाज एक वृहत् बहुजन समाज है। इसके वास्तविक स्वरूप को समझने के लिए सभी परम्पराओं तथा संस्थाओं का अध्ययन आवश्यक है जिनकी संयुक्तता से भारतीय सामाजिक व्यवस्था का निर्माण हुआ है।

भारतीय समाज में धार्मिक परम्परा का प्रभाव अत्यधिक प्रबल है विशेषतः ग्रामीण समाज में धार्मिक परम्परा का प्रभाव अत्यधिक प्रबल है। विशेषतः ग्रामीण समाज में धर्म, कर्म तथा परम्परा से जीवन अत्यधिक प्रभावित है। अधिकांश ग्रामीण समाज आज भी रूढ़ियों व परम्पराओं में जीवन व्यतीत कर रहे हैं तथा इनका प्रभाव ग्रामीण व्यवसायों, मूल्यों, विचारों तथा नैतिकता में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

भारत में बहुसंख्यक जनसंख्या आज भी गाँवों में निवास कर रही है तथा अधिकांश ग्रामीण आज भी पूर्णतया परम्परावादी हैं और गाँवों में आज भी कई परम्पराएँ ऋग्वेद से चली आ रही हैं।

मानवीय सृष्टि में लोकजीवन के आयामों का क्षेत्र अपरिमित एवं अपरिमेय है। इसका प्रारम्भ मानव के रूप में इस धरती पर अवतरित होने से पूर्व ही हो जाता है और उसके अपने भौतिक पिण्ड के परित्याग के पश्चात् तक स्थान विशेष एवं काल विशेष से संचालित होता हुआ चलता रहा है। इसके नियामक तत्वों को सांस्कृतिक एवं सामाजिक परम्पराओं के नाम से अभिहित किया जाता है। देश काल के अनुरूप उसकी दिनचर्या के साथ इसमें संकोच–विस्तार होता रहता है। इन सबका संकेतबोध जिस एक शब्द में किया जा सकता है वह है 'लोकजीवन'। भारतीय समाज आज परिवर्तन की तीव्र प्रक्रिया में है, यह सत्य है कि हमारे समाज की सामाजिक संस्थाओं, मूल्यों तथा सांस्कृतिक विशेषताओं में प्रत्येक युग में कुछ न कुछ परिवर्तन सदैव होते रहे हैं लेकिन स्वतंत्रता के बाद समाज में विभिन्न पक्षों में जितनी तेजी के साथ परिवर्तन हुये, उसकी कुछ समय पहले तक कल्पना करना भी कठिन था।

साहित्य पुनरावलोकन

लघु परम्पराओं के आधार पर रॉबर्ट रेडफील्ड ने मैक्सियन समुदाय का अध्ययन प्रस्तुत किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना था कि अमुक संस्कृति में किस प्रकार परिवर्तन घटित हो रहे हैं। अध्ययन की इस पद्धति से मैकिम मैरियट और मिल्टन सिंगर काफी प्रभावित हुये उन्होंने इस अध्ययन पद्धति को किशनगढ़ नामक गाँव में प्रयोग किया। इस अध्ययन पद्धति का मुख्य उद्देश्य सभ्यता और परम्परा व सामाजिक संगठन का अध्ययन करना था। सभ्यता का यह स्वरूप दो प्रकार से कार्य करता है – प्रथम संस्कृति प्रक्रिया जो कृषकों के मध्य घटित होती है उसे लघु परम्परा और जो अभिजात्य वर्ग में कार्यरत होती है उसे वृहत् परम्परा की संज्ञा दी जाती है। दोनों संस्कृतियों के मध्य निरन्तर अन्तक्रियायें चलती हैं, ये सांस्कृतिक कार्य व वृहत संस्कृति का एक अभिन्न अंग बन जाती है और संस्था का रूप धारण कर लेती है।

डॉ. दूबे का कहना है कि जहाँ तक लघु एवं वृहत् परम्पराओं का सवाल है, इनकी कोई

निश्चित परिभाषा नहीं दी जा सकती। जहाँ एक ओर अधिक वृहत् या अनेक वृहत् परम्परायें हैं उनमें से प्रत्येक के अपने प्रमाणित ग्रन्थ एवं नैतिक आचार–संहितायें हैं, परिस्थिति उनको और अधिक उलझनपूवर्ण बना देती है। इतना और कहा जाता सकता है कि **वृहत्** एवं **लघु परम्पराओं** का सन्दर्भ ढांचा क्षेत्रीय, पश्चिमी एवं उभरती हुई राष्ट्रीय परम्पराओं, जिनमें से प्रत्येक अपने तरीके से शक्तिशाली है, कि भूमिका एवं महत्व के मनन के लिए समुचित क्षेत्र प्रदान नहीं करता।

शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं से लघु परम्पराओं के विषय में जानकारी प्राप्त करना है।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र उत्तराखण्ड राज्य के जनपद चम्पावत के लोहाघाट तहसील के अन्तर्गत चयनित गाँव रायनगर चौड़ी तथा कलीगाँव पर आधारित है। ग्राम रायनगर चौड़ी से 81 तथा ग्राम कलीगाँव से 181 परिवारों का चयन ग्राम सूची बनाकर लॉटरी पद्धति से किया गया जिनमें प्रत्येक परिवार की महिला मुखिया सदस्या अध्ययन के लिए सूचनादाता है तथा प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है तथा द्वितीयक स्रोतों के रूप में जो शोध प्रतिवेदन, शोध पत्र, शोध अभिलेख, शोध विषय से सम्बन्धित सामग्री जो विभिन्न आलेखों, प्रलेखों, पत्र–पत्रिकाओं एवं ग्रन्थ में उपलब्ध सामग्री का प्रयोग किया गया है।

तालिका संख्या – 1

उत्तरदाताओं का धर्म पर विश्वास का स्तर के आधार पर वर्गीकरण

क्या आप धर्म पर विश्वास करती हैं	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	234	100.00
नहीं	–	–
योग	**234**	**100.00**

तालिका संख्या 1 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बहुसंख्यक 100 प्रतिशत उत्तरदाता धर्म पर विश्वास करती हैं। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में आज भी धर्म के प्रति आस्थाभाव है तथा लोग धर्म पर विश्वास करते हैं।

तालिका संख्या – 2

धर्म की व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यकता के आधार पर उत्तरदाताओं पर वर्गीकरण

क्या आप धर्म को व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक मानती हैं	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	234	100
नहीं	–	–
योग	**234**	**100**

जैसा कि तालिका संख्या 1 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में बहुसंख्यक उत्तरदाता धर्म पर विश्वास करती हैं तो इसी सन्दर्भ में तालिका संख्या 2 में पूछा गया कि क्या आप धर्म को व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक मानती हैं? स्वाभाविक है कि बहुसंख्यक 100 प्रतिशत उत्तरदाता जो धर्म पर विश्वास करती हैं वे सभी धर्म को व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक मानती हैं। सभी का मानना है कि धर्म एक संहिता है जो हमारे व्यवहार को नियमबद्ध करके हमारे व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है।

तालिका संख्या – 3

मूर्ति पूजा किये जाने के स्तर के आधार पर उत्तरदाताओं वर्गीकरण

क्या आप मूर्ति पूजा करते हैं	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	234	100.00
नहीं	–	–
योग	**234**	**100.00**

तालिका संख्या 3 के विश्लेषण से ज्ञात है कि 100 प्रतिशत उत्तरदाता मूर्ति पूजा करते हैं। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में बहुसंख्यक लोग मूर्ति पूजा में विश्वास करते हैं तथा सभी लोग ईश्वर के प्रति आस्थावान हैं।

तालिका संख्या – 4

उत्तरदाताओं द्वारा पूजा–पाठ करने के आधार पर वर्गीकरण

आप पूजा–पाठ कब करती हैं	आवृत्ति	प्रतिशत
प्रतिदिन	231	98.72
कभी–कभी	3	1.28
कभी नहीं	–	–
योग	**234**	**100.00**

तालिका संख्या–3 के विश्लेषण से ज्ञात है कि बहुसंख्यक लोग मूर्ति पूजा करते हैं इसी सन्दर्भ में उत्तरदाताओं से पूजा–पाठ करने की समयावधि के विषय में जानने का प्रयास किया गया है।

तालिका संख्या 4 के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि 98.72 प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिदिन पूजा–पाठ करते हैं जबकि 1.28 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी पूजा–पाठ करते हैं तथा क्षेत्र में ऐसा कोई भी उत्तरदाता नहीं है जो पूजा–पाठ नहीं करता है।

अतः स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में बहुसंख्यक लोग पूजा–पाठ करते हैं।

तालिका संख्या – 5

उत्तरदाताओं के सर्वाधिक पसंदीदा त्यौहार के आधार पर वर्गीकरण

आप किस त्यौहार को सर्वाधिक पसंद करती हैं	आवृत्ति	प्रतिशत
होली	187	79.92
दशहरा	–	–
दीपावली	47	20.08
अन्य	–	–
योग	**234**	**100.00**

तालिका संख्या 5 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में बहुसंख्यक 79.92 प्रतिशत उत्तरदाता होली त्यौहार को पसंद करती हैं। न्यूनतम 20.08 प्रतिशत उत्तरदाता दीपावली के त्यौहार को पसंद करती हैं। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में होली के त्यौहार को पसंद करते हैं।

तालिका संख्या – 6

उत्तरदाताओं द्वारा त्यौहारों को मनाने के कारण के आधार पर वर्गीकरण

आप त्यौहारों को क्यों मनाती हैं	आवृत्ति	प्रतिशत
धार्मिक दृष्टि से	228	97.44
परम्परावश	6	2.56
अन्य	–	–
योग	**234**	**100.00**

तालिका संख्या 6 के विश्लेषण से ज्ञात है कि 97. 44 प्रतिशत लोग धार्मिक दृष्टि से त्यौहारों को मनाते हैं तथा 2.56 प्रतिशत उत्तरदाता परम्परावश त्यौहारों को मनाते हैं। अतः स्पष्ट है कि बहुसंख्यक उत्तरदाता धार्मिक दृष्टि से त्यौहारों को मनाते हैं।

तालिका संख्या – 7

देवी–देवता के मंदिर में पूजा करने के माध्यम के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

किसी देवी–देवता के मंदिर में पूजा करने के लिए आप क्या करते हैं?	आवृत्ति	प्रतिशत
सामान्य पूजन	07	2.99
हवन	06	2.56
बलि चढ़ाना	208	88.89
अन्य	13	5.56
योग	**234**	**100.00**

तालिका संख्या 7 के विश्लेषण से ज्ञात है कि अध्ययन क्षेत्र में देवी–देवताओं के मंदिर में पूजा करने के लिए बहुसंख्यक 88.89 प्रतिशत लोग बलि चढ़ाने वाली पूजा करते हैं, जबकि 2.99 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य पूजन करते हैं, 2.56 प्रतिशत उत्तरदाता हवन से देवी–देवता की स्तुति करते हैं, जबकि 5.56 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य क्रियायें जैसे – कीर्तन, जागर, दिवाई आदि से ईश्वर की स्तुति करते हैं।

तालिका संख्या – 8

उत्तरदाताओं का देव–पितृ बाधा से पीड़ित होने के स्तर के आधार पर वर्गीकरण

क्या आप देव/पितृ बाधा से परेशान हैं?	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	198	84.62
नहीं	24	10.25
जानकारी नहीं है	12	5.13
योग	**234**	**100.00**

तालिका संख्या 8 के विश्लेषण से ज्ञात है कि अध्ययन क्षेत्र में बहुसंख्यक 84.62 प्रतिशत उत्तरदाता पितृ बाधा से परेशान हुयी हैं, जबकि 10.25 प्रतिशत उत्तरदाता देव/पितृ बाधा से परेशान नहीं हुयी है तथा न्यूनतम 5.13 प्रतिशत उत्तरदाताओं को इसकी जानकारी नहीं है। अतः स्पष्ट है कि बहुसंख्यक उत्तरदाता देव/पितृ बाधा से परेशान हुयी हैं।

तालिका संख्या – 9

देव–पितृ बाधा से बचाव के उपाय के स्तर के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

देव/पितृ बाधा से बचाव के लिए आप क्या उपाय करते हैं?	आवृत्ति	प्रतिशत
पूजा–पाठ	3	1.28
हवन द्वारा आहुति	–	–
बलि देना	12	5.14
देव डांगरों द्वारा देव स्तुति करके (दिवाई/जागर आदि)	219	93.58
योग	**234**	**100.00**

तालिका संख्या 9 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बहुसंख्यक 93.58 प्रतिशत उत्तरदाता देव डांगरों द्वारा देव स्तुति करके देव–पितृ बाधा से बचाव करते हैं जबकि मात्र 1.28 प्रतिशत उत्तरदाता पूजा–पाठ करके देव–पितृ बाधा से बचाव करती हैं। स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता दिवाई, जागर आदि से ही देव–पितृ बाधा से बचाव करने का प्रयास करते हैं तथा 5.14 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जो बलि द्वारा देव–पितृ बाधा से बचाव करने का प्रयास करते हैं।

तालिका संख्या – 10

अशरीरी आत्माओं से सामान्य की भाँति व्यवहार करने के स्तर के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्या अशरीरी आत्माओं से आप सामान्य की भाँति व्यवहार करती हैं?	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	222	94.87
नहीं	12	5.12
योग	**234**	**100.00**

तालिका संख्या 10 के विश्लेषण से ज्ञात है कि बहुसंख्यक 94.87 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना हे कि अशरीरी आत्माओं से वे सामान्य की तरह व्यवहार कर लेती हैं तथा मात्र 5.12 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि वे अशरीरी आत्माओं से सामान्य की भाँति व्यवहार नहीं करती हैं। कहने का तात्पर्य है कि अधिकांश उत्तरदाता अशरीरी आत्माओं यानि कि जब देवाई आदि के माध्यम से सामान्य शरीर में प्रविष्ट आत्माओं से सामान्य की भाँति उनके मृत होने से पूर्व या पितरों की भाँति सामान्य प्रश्नोत्तर के माध्यम से बात करते हैं तथा स्वयं की जिज्ञासा को शान्त करते हैं।

तालिका संख्या – 11

परिवार के कुलदेवता की जानकारी आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

आपके परिवार का कोई कुलदेवता है?	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	234	100.00
नहीं	–	–
योग	**234**	**100.00**

तालिका संख्या 11 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में 100 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जिनके कुल के कुलदेवता हैं।

तालिका संख्या – 12

परिवार के कुलदेवता के परिचय के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

अपने कुलदेवता का नाम बताइये	आवृत्ति	प्रतिशत
कालेशन	83	35.48
गजार	23	9.82
गंगनाथ	12	5.13
व्यान्धुरा	11	4.70
भगवती	18	7.69
कालिका	13	5.56
ऋषेश्वर	42	17.95
अन्य	32	13.67
योग	**234**	**100.00**

तालिका संख्या – 13

समस्त अन्य बातों के असफल होने पर टोना–टोटका के चमत्कारी सिद्ध होने के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

जहाँ पर समस्त बातें असफल हो जाती हैं वहाँ पर नजर–टोना टोटका चमत्कारी सिद्ध होता है	आवृत्ति	प्रतिशत
पूर्ण सहमत	153	65.38
सहमत	23	9.83
पूर्ण असहमत	13	5.56
असहमत	31	13.25
तटस्थ	14	5.98
योग	**234**	**100.00**

तालिका संख्या 13 के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि 65.38 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्ण सहमत हैं कि समस्त बातें असफल हो जाती हैं वहाँ पर नजर–टोना टोटका चमत्कारी सिद्ध होता है। 9. 83 प्रतिशत सहमत हैं जबकि 5.56 प्रतिशत पूर्ण असहमत हैं। 13.25 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं जबकि 5.98 प्रतिशत उत्तरदाता इस परिप्रेक्ष्य में पूर्ण रूप से तटस्थ हैं कहने का तात्पर्य है कि बहुसंख्यक उत्तरदाता नजर–टोना टोटका के चमत्कारी सिद्ध होने के पक्ष में हैं।

तालिका संख्या – 14

वर्तमान में आयोजित होने वाली लघु परम्पराओं के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

आपके यहाँ कौन–कौन सी परम्पराऐं आज भी विद्यमान हैं?	आवृत्ति	प्रतिशत
घुघुतिया (मकर संक्रांति)	234	100.00
सिर पंचमी (बसंत पंचमी)	234	100.00
फूल संक्रांति (चैत्र प्रतिपदा)	234	100.00
अष्टमी पूजन (देवता पूजन/नवरात्रि)	234	100.00
दशमी पूजन (देवी पूजन/प्रेत पूजन)	234	100.00
एकासी त्यार (बल्दिया त्यार)	153	65.38
विषबग (विषुवत संक्रान्ति)	234	100.00
देवी मेला (आषाढ़ मेला)	234	100.00

हरेला (कर्क संक्रांति)	234	100.00
घी त्यार (घृत संक्रान्ति)	234	100.00
खतरक्या	234	100.00
बग्वाली (यम द्वितीया)	234	100.00

तालिका संख्या – 15

उत्तरदाताओं द्वारा लघु परम्पराओं के विषय में मत के आधार पर वर्गीकरण

आपका इन लघु परम्पराओं के विषय में क्या मत है?	आवृत्ति	प्रतिशत
लोग रूढ़ियों/परम्पराओं केा छोड़ते जा रहे हैं	02	0.86
पहले की तरह विश्वास करते हैं	229	97.86
कुछ परम्पराओं व रीति–रिवाजों को छोड़ दिया गया है	03	1.28
अन्य	–	–
योग	**234**	**100.00**

तालिका संख्या 15 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बहुसंख्यक 97.86 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जो लघु परम्पराओं में पहले की तरह विश्वास करते हैं। 1.28 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जो कुछ परम्पराओं व रीति–रिवाजों को छोड़ते जा रहे हैं। 0.86 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जो लोग रूढ़ियों/परम्पराओं को छोड़ते जा रहे हैं। कहने का तात्पर्य है कि बहुसंख्यक 97.86 प्रतिशत आज भी लघु परम्पराओं में पहले की तरह विश्वास करते हैं।

तालिका संख्या – 16

लघु परम्पराओं में परिवर्तन होने के स्तर के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

आपके अनुसार लघु परम्पराओं में परिवर्तन हुआ है	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	162	69.24
नहीं	72	30.76
योग	**234**	**100.00**

तालिका संख्या 16 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बहुसंख्यक 69.24 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि लघु परम्पराओं में परिवर्तन हुआ है तथा 30.76 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मतानुसार लघु

परम्पराओं में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ है। अतः स्पष्ट हुआ कि बहुसंख्यक उत्तरदाताओं के मतानुसार लघु परम्पराओं में परिवर्तन हुआ है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र के निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि आज भी अध्ययन क्षेत्र के लोग बहुसंख्यक उत्तरदाता लघु परम्पराओं के महत्व को सहर्ष स्वीकारते हैं। अध्ययन क्षेत्र में व्रत, उपवास, देव–पितृ बाधा, प्रेत पूजन तथा इनसे सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रमों को तन्मयता से किया जाता है। साथ ही साथ धार्मिक संस्कारों को लोक गीतों, लोक कथा के महत्व को अति उत्सुकता तथा भावपूर्ण तरीके से आयोजित किया जाता है तथा उन सभी कार्यक्रमों में स्थानीयता का भाव दृष्टिगत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- रेडफील्ड, रॉबर्ट (1941) द लिटिल कम्यूनिटी, शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस, शिकागो.

2- श्रीनिवास, एम.एन. (1952) रिलीजन एण्ड सोसायटी अमंग द कुर्म ऑफ साउथ इण्डिया, राधाकमल पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली.

3- शर्मा, डी.डी. (2015) उत्तराखण्ड का लोक जीवन, लोक संस्कृति, अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी.

4- https://him.wikipedia.org.

5- https:// www.csirs.org.in

6- https://hindi.webdunia.com